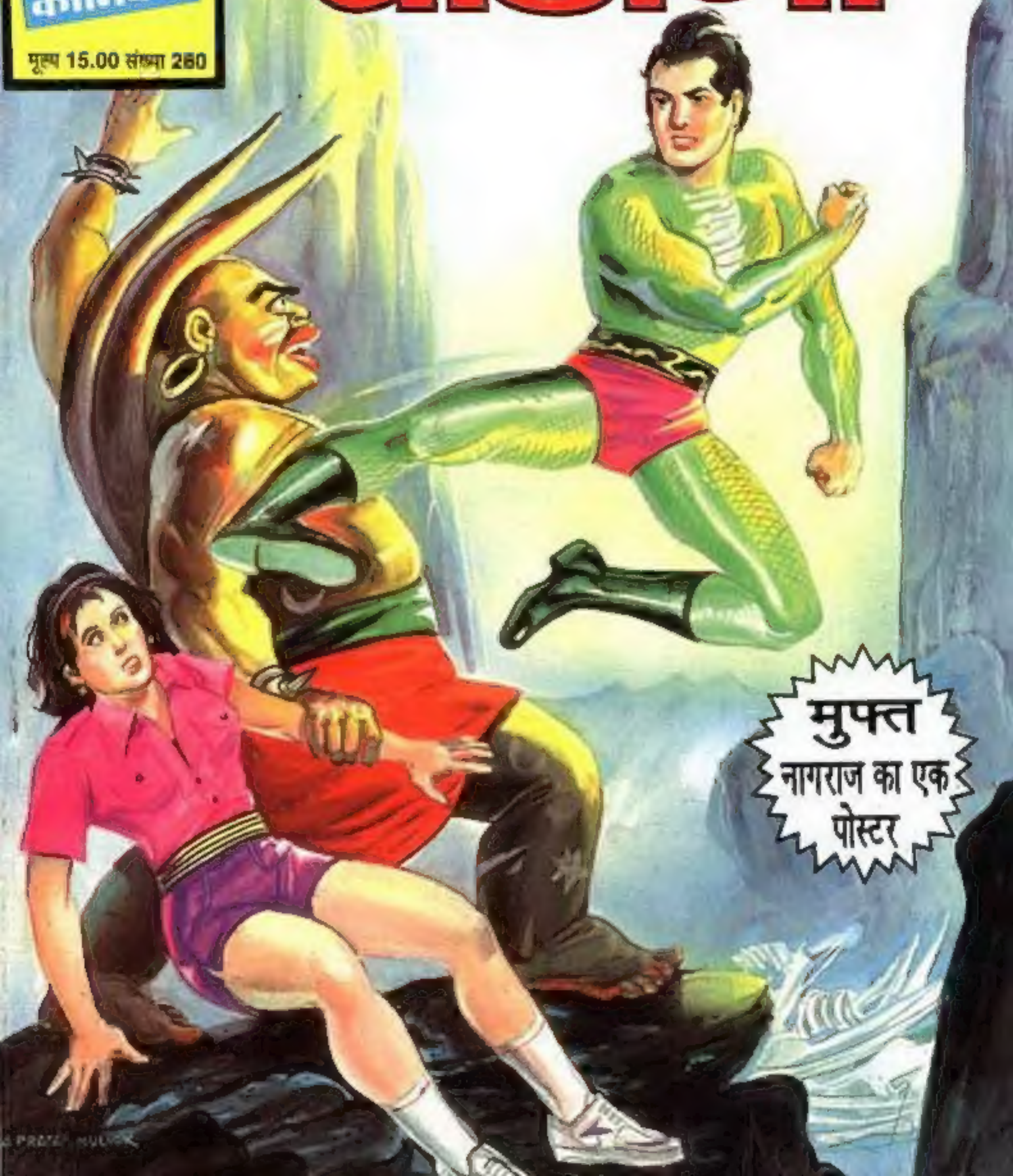


राज
कॉमिक्स

मूल्य 15.00 संख्या 260

बागाराज और थोडांगा



मुफ्त

नागराज का एक
पोस्टर

साम्राज और थोडांगा

* लेखक : संजय गुप्ता
* संपादन : मनीष चंद्र गुप्त
* चित्रांकन : सुकीक स्टुडियो



सम्राट थोडांगा

तन्जानिया के जंगलों का बैलाज बादशाह
जंगल का सबसे क्रूर व हिंसक जानवर
कहते हैं उसे।

हाथियों को तो वह यूँ
काटता है, जैसे लोग
भेड़-भकरियाँ काटते हैं।

थोडांगा को रोज एक हाथी का मांस खाने के लिये चाहिए इसलिए
थोडांगा की घाटी में कोई जीवित हाथी नहीं मिलता।

थोडांगा ने एकाएक हाथी के सीट का वह दुकड़ा नोचना बन्द किया।



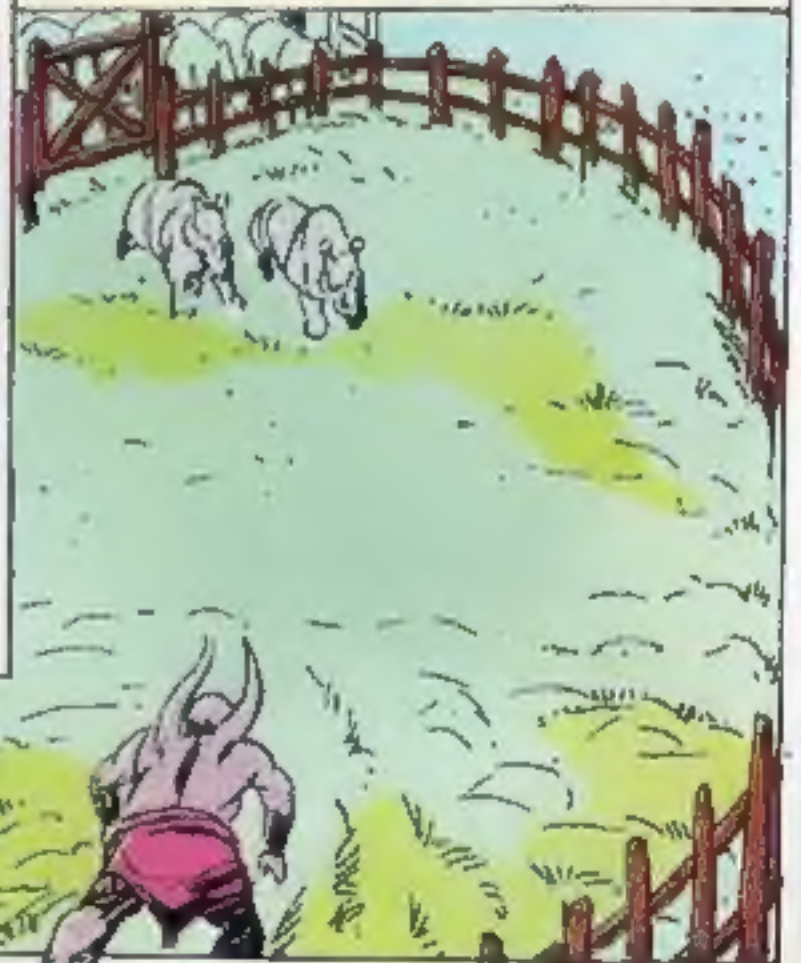
यह शायद संकेत था जिपा के लिए—



जिपा ने पिंजरे का द्वार खोल दिया।



थोडांगा गैंडों वाले जंगल में प्रवेश कर गया

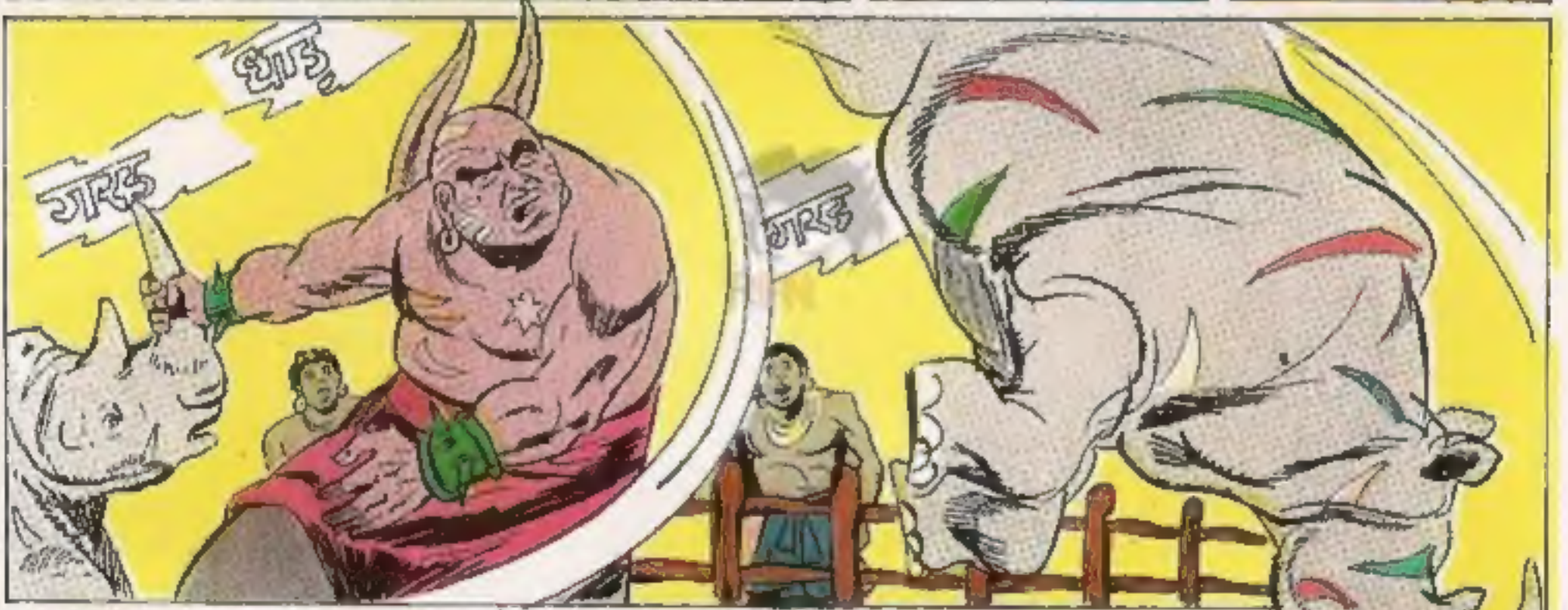


और... इन्सानी गैंडा दो गैंडों के सामने खड़ा था—



अपने महादुश्मन को सामने देखते ही दोनों गैण्डे क्रोधसे
बिफरे थोड़ागा पर झपटे -

ओह! दोनों एक साथ ही
आ रहे हैं! आओ-आओ!



दूसरे गैण्डे को भी सींग से पकड़कर उठा लिया थोड़ागा ने -



अब तुझे तेरे चार
के पास भेजूंगा गैण्डे



धोड़ांगाने भयंकर हुंकार भरी। आश्चर्य-जनक रूप से उसका सिर गर्दन में समा गया, फिर —



इसी क्षण दूसरे गंडे ने धोड़ांग के टक्कर जड़ दी।



पट से धोड़ांग का सिर बाहर निकला —



भयानक रूप से गैड़ा थोड़ागा पर झपटा। उसनी ही तेजी से टकराए थोड़ागा के सींग गैड़े के सींगों से —



बेहद हिंसक हो चुके थोड़ागा ने अधमरे गैड़े का सींग पकड़कर उखाड़ दिया —



गैड़ों के मरते ही जिपाने बाड़े में प्रवेश किया —



मुबारक हो सम्राट थोड़ागा!



इन दोनों की लाशों की ठिकाने लगा दो जिपा!

थोड़ागा वापस अपने टब में आकर फैल गया।



मेरा मकसद अभी अधूरा है। काबुकी का खजाना चाहिए मुझे

और खजाना तब तक मुझे हासिल नहीं हो सकता जब तक गुरु एलिफेंटा अपने मकसद में कामयाब नहीं हो जाते।
उफ!

‘काबुकी के खजाने’ के विषय में जानने के लिये 5 पढ़ें: ‘नागराज और काबुकी का खजाना’



सम्राट थोड़ीगा!
सम्राट थोड़ीगा!



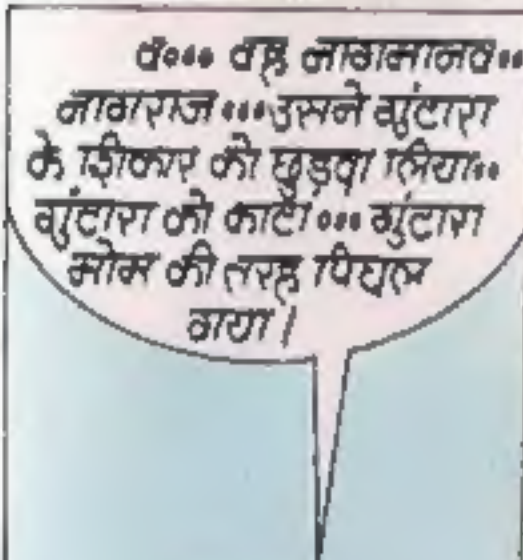
वा... गुंटारा! गुंटारा
मर गया सम्राट थोड़ीगा!

गुंटारा मर गया!
क्या बक रहा है
हरामजादे!



कैसे मर गया
गुंटारा?

स...
सम्राट...



वा... वह नागमानव...
नागराज... उसने गुंटारा
के डीकार को छुड़वा लिया...
गुंटारा को काटी... गुंटारा
मोम की तरह पिघल
गया।



नहीं!



वैद्य की तरह उद्यतकर वह दब से बाहर निकल आया -

जिपा! तू तो कहता
था कि तूने उस नाग-
मानव नागराज को
हथौड़े से मार डाला
है।

वह
गुंटारा की
छाती कैसे पहुंच
गया?

मैंने उसे मार
डाला था सम्राट थोड़ीगा
मेरे हाथों की एक चोट ही
उसके लिए काफी थी।



सम्राट... थोड़ा... थोड़ा... हमने
गैडों को लगभग एकड़ लिया था।
लेकिन तभी उस नागसागर ने...।
सम्राट... उसके ऊपर से सांप
छूटते थे। उसने हमें कार-पीट
का हमसे गैडों को बचा
लिया।

नागराज!
मैं तुझे कच्चा
पखा जाऊंगा।



कुछ थोड़ा ने उन जंगलियों को
गैडों के घांव तले कुचलवा दिया—

फिर—

जिण! सिंसी नाम
की वह सुन्दरी कहाँ है?
जस पौरुष और कौशल की
बीची है न तो?

सम्राट थोड़ागा!
उसे गुफा में कैद
किया है मैंने।



और फिर चले पहा लीया मौल
क ताण्डव मचाने सकास की ओर—

उधर नागराज डेनियल के साथ गुंढारा की घाटी
में बाहर निकला—

नागराज! यहां
के जंगली कबीलों
का बच्चा-बच्चा थोड़ागा
की घाटी का पता
जाता है...

अब हमें थोड़ागा की
घाटी पहुंचना है।



...लेकिन थोड़ागा के
अध से कोई अपनी जुबान
नहीं खोलेंगा।

सकास का सरदार
ओसाका जस हकारी
मदद करेगा।



ठीक उसी क्षण सकास कबीले पर तबाही दस्तक
दे रही थी—



झिप!

कहते हैं जिपा का हथौड़ा जब उठता है तो तबाही आ जाती है।

लाशों के ढेर लग जाते हैं।

सम्राट थोडांगा
से नमक हरासी? आज
के बाद कोई ये दुःसाहस
नहीं करेगा।

??



और लाशों के ढेर लग भी गए।

झींझ ही बुरी तरह आतंकित बचे-खुचे कबीले के लोग
जिपा के पैरों पर आ गिरे -

बस जिपा बस। और
कहर मत बरसाओ। रोक
लो अपना हाथ।

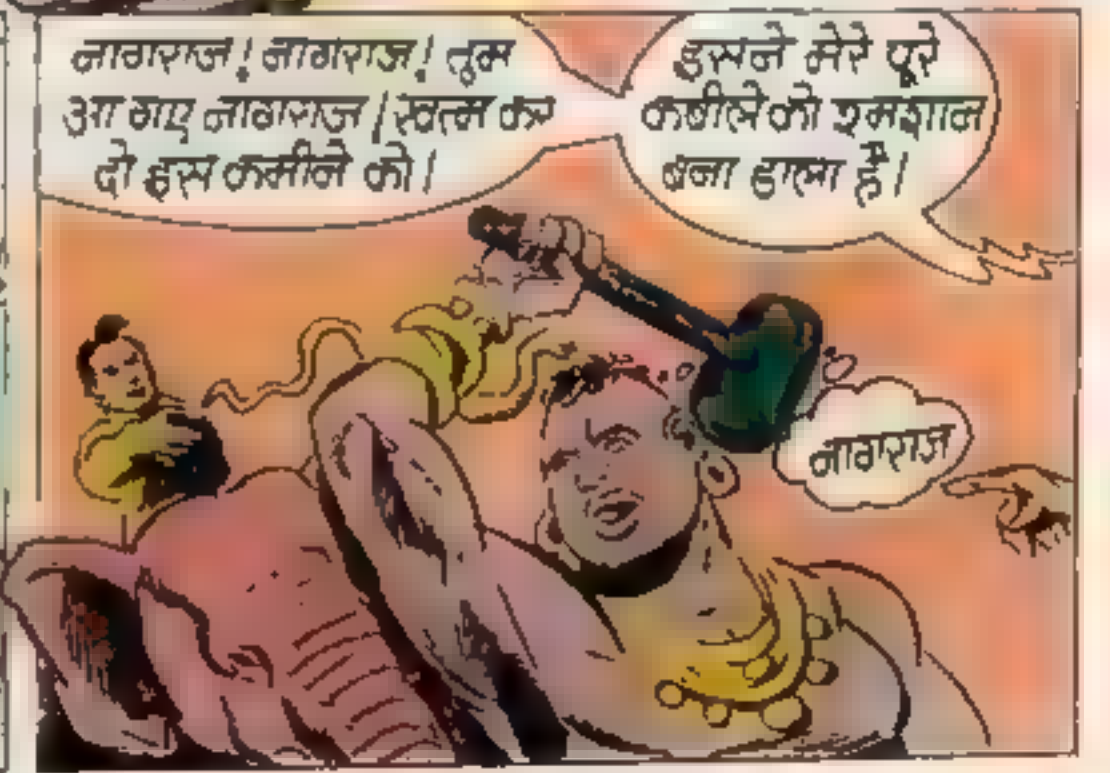
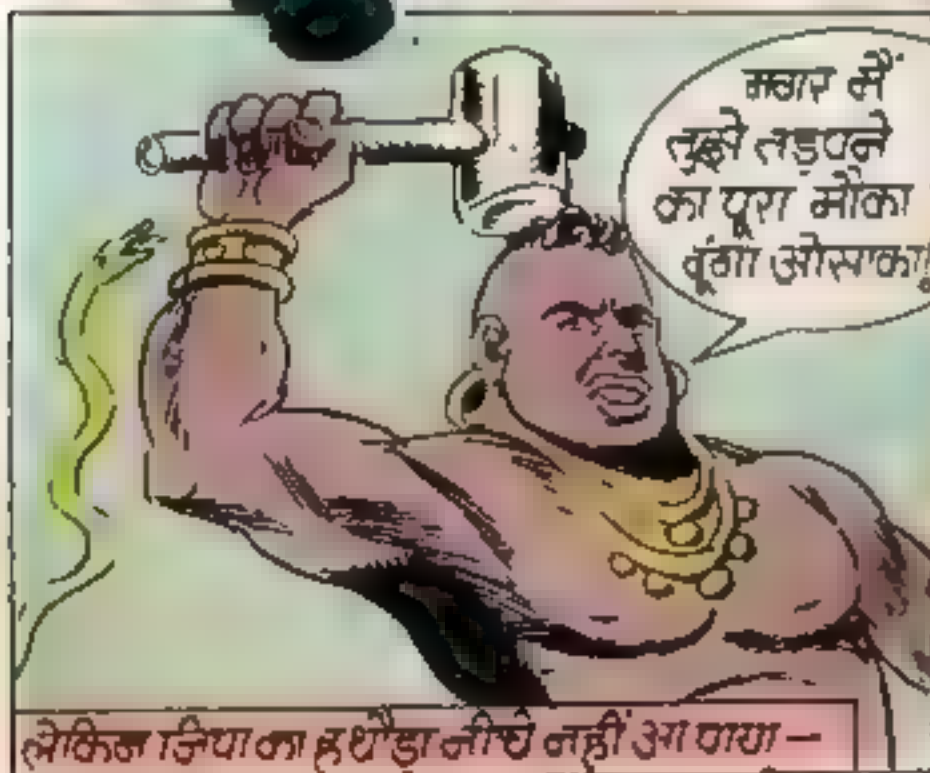
घाणों की
भीख दे दो
हमें।



नहीं। जासिक के
सामने अपना सिर मत
झुकाओ। कट जाने दो
ये सिर।

ओसाका?







छात्राओ नही
सरदार उनेसाका!
अब ये जिन्दा नही
बचेगा।



अगले ही पल—

धुमधुम
झिरझिर



हज केचुओं का
जहर कुहर पर असर नही
करता नागराज!

जिपा का हथौड़ा
ओसाका के सिर
से टकराया और
वह बेहोश
हो गया—



जिपा अपना हथौड़ा उठाने के
लिए झुका ही था, कि—

बादक



अगला बार करने का मौका
नही मिला उसे—

नागराज!
अपने भगवान को
याद कर ले।



नागराज की आंखों के
आगे अंधेरा छाने लगा—

ओह! इसने मुझे
ऐसे दाव में जकड़ लिया
है कि वस कीट के इस
राक्षस के शरीर में मैं
अपने दांत भी नहीं
वाढ़ा सकता।



तभी—

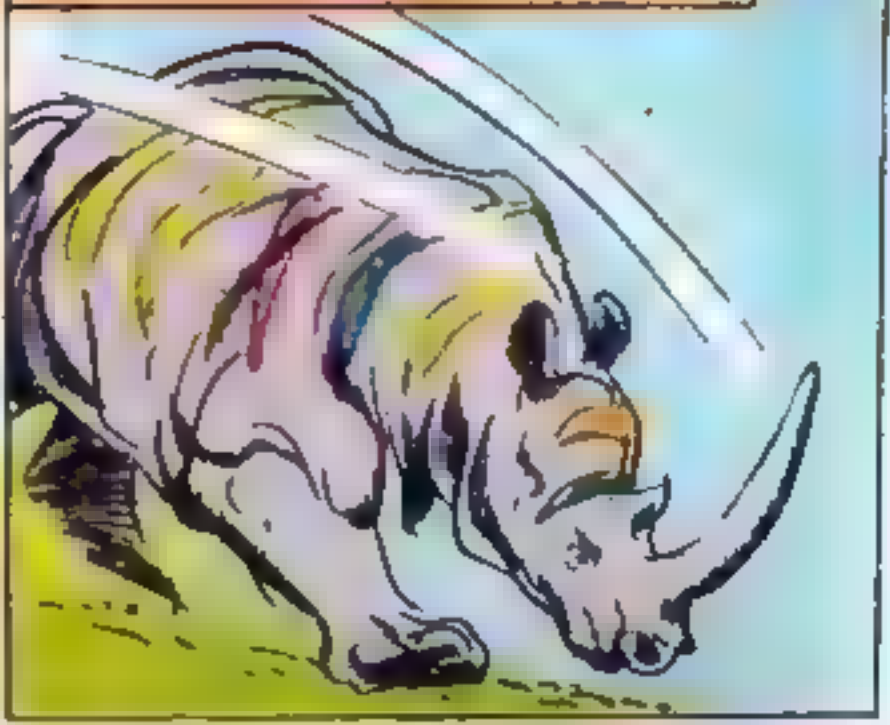
अरे यह
हमला किसने
किया?
कौन है मेरा
मददगार?

अहम

हमलावर को देखते ही जाकराज को आश्चर्य का झटका लगा—



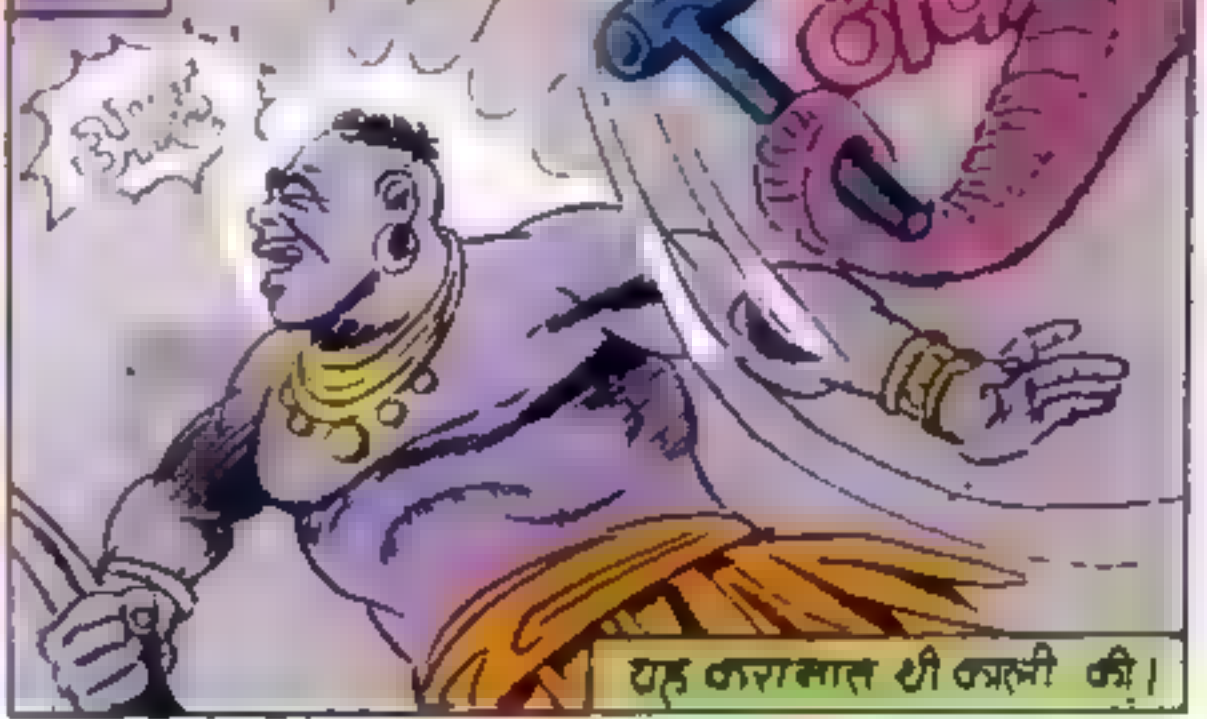
गौंहे को देखते ही जिण ने एक भयंकर हुंकार भरी। ठीक इसी पल गौंहा पुनः जिण पर झपटी—



जिण ने गौंहे को सींग से पकड़ लिया—

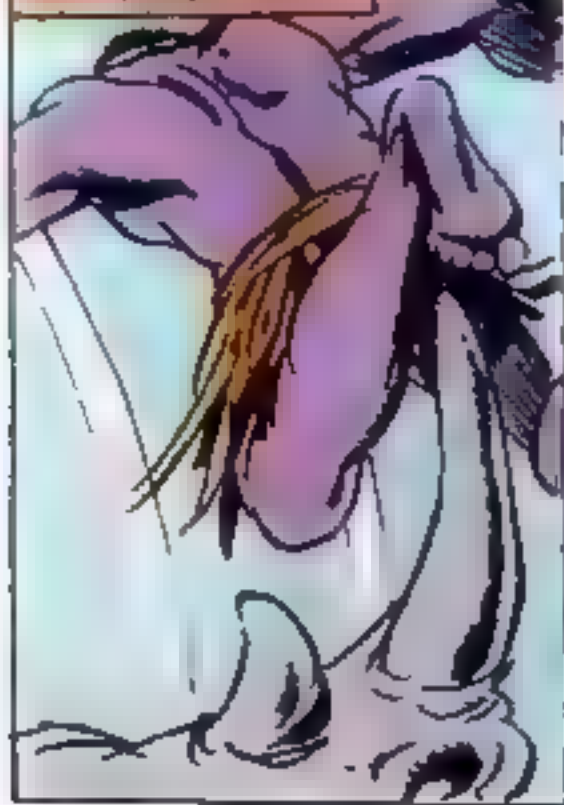


कभी—



यह कारनामा ही कभी की।

हथौड़े की चोट से उछलकर जिण गौंहे पर गिरा। गौंहे ने उसे सींगों पर रखकर उछाल दिया—



कभी ने सूँठ में जकड़ा हथौड़ा एक बार फिर घुमाया—



हथौड़े की चोट से जिण उछलता तो गौंहे का सींग उसकी पीठ में जा घुसा—



इसी पल नागराज के हाथ से निकलकर जिंघा की गर्दन को काट लिया नागराजजी ने —

जिंघा! तू तो जानवर कहलाने के भी लायक नहीं।

देख, जानवर कितने सद्वर्णर साबित होते हैं।



इस बार जिंघा नीचे गिरा, तो फिर उठ न सका —

काह्मी... सतलंगो! दोस्तो! आज तुमने अपनी दोस्ती का फर्ज सूरुब निभाया। नागराज तुम्हें हमेशा याद रखेगा।

नागराज! ओसाका हाथद बेहोश हो गया है।



नागराज व डेलियल ने ओसाका को नीचे उतारा। काह्मी सूरुब से पाली कर लाया, और —

वाह, काह्मी!



जल्दी ही ओसाका को होश आ गया —

आह! क्या जिंघा मारा गया?

हां, सरदार ओसाका! वह पड़ी उस कमीने हत्यारे की लाश।



थोडांगा का भी यही हथ होना है ओसाका! लेकिन यह तब होगा जब तुम हमें थोडांगा की छाटी ले जाओ।

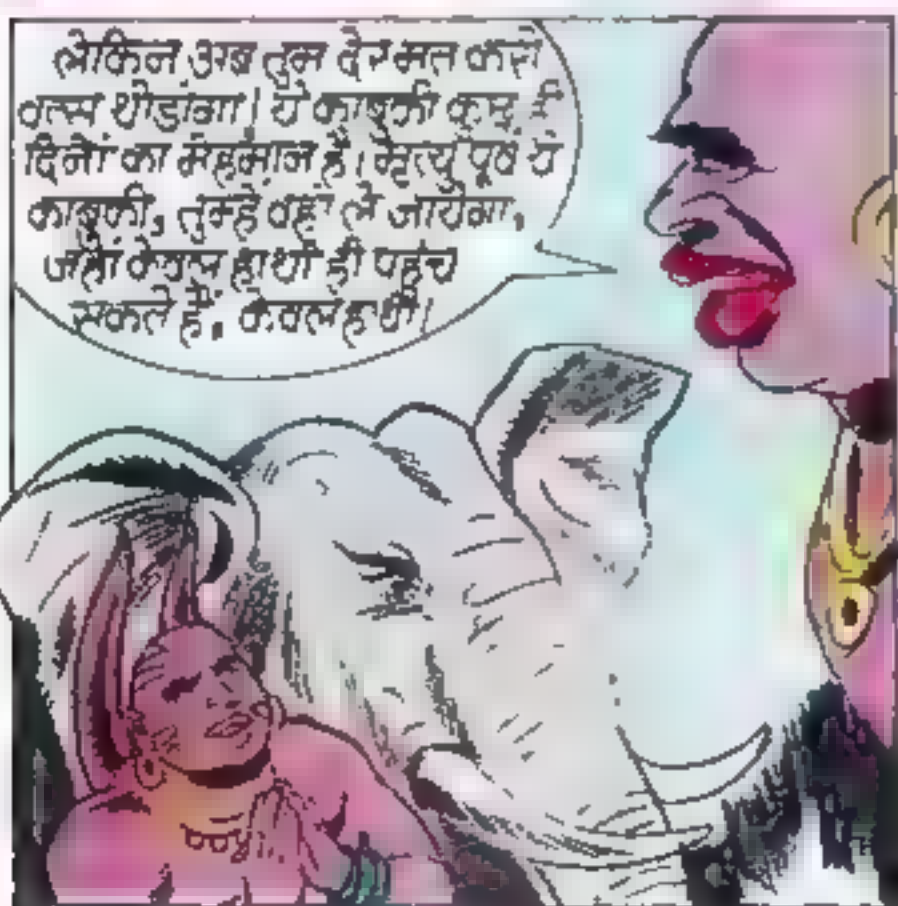
हां-हां! अपनी जान की परवाह नहीं सुझे! मैं तुम्हें वहां जरूर ले जाऊंगा नागराज!



उधर थोडांगा की छाटी में थोडांगा उस समय उछल पड़ा —

जीवित काबुकी! थोडांगा की छाटी में जीवित काबुकी!





हाथों पर चढ़ बैठा थोडांगा, सभी—

सम्राट थोडांगा!
जिपा... जिपा ?

??

क्या हुआ जिपा
को ? कहाँ है
वो ?

सम्राट
थोडांगा जिपा की
लाश... वहाँ
मकालू कबीले
में...

नहीं!

मैंने वहाँ
सरदार ओसाका
के साथ नागराज
को देखा है, सम्राट
थोडांगा!

नागराज! ओह! जिपा
को भी मार डाला उस
हरामखोर ने!

ओसाका को लेकर वह
थोडांगा की छाती आए, उससे
पूछ ही मुझे यहाँ से कुछ
कर जाना चाहिए!

??

सुनो! चारों तरफ फैल
जाओ। वो कमीले इसी तरफ
आएंगे। छाती में कदम रखते ही
मौल डालो उन्हें।

फिर—

आह!
छोड़ दे मुझे
कमीले!

तुम मेरे
साथ चलोगी
मिस्री!

छोड़ करनीले!
आह!

अगर उन्होंने मेरा रास्ता रोकने
की चेष्टा की तो इसकी जाक लेने
की धमकी उनके कदमों में
बेड़ियां छर देंगी।

बड़ी मुश्किल से हाथ
भगा है ये काबुकी! मैं यह
सुनहरी मौक़ा लुटाना -
झगड़े में नहीं गंगा
सकता।

उफ! इसकी
गैडि जैसी स्वाभाव पर
मेरे मुँह का कोई
असर ही नहीं
हो रहा।

इधर जागराज, डेनियल व ओसाका के साथ काली पर स्वार थोड़ंगा की घाटी के निकट आ पहुँचा -

जागराज! उस हाथी
की हाकल की भारी चट्टान के
पीछे से रास्ता जाता है थोड़ंगा
की घाटी की।

ओह! हम थोड़ंगा
के दरिया में हैं। डेनियल
सावधान रहना। तुम
भी ओसाका!

लेकिन अभी वे उस चट्टान से
कुछ दूर ही थे कि -

स्वतन्त्र!

हूर्वर्
टुंग टुर्वर्व

उफ!

बचो सरदार!
डेनियल

दोबारा काचरिंग का मौक़ा जागराज ने
उन्हें नहीं दिया -

हिवक्

फुक्क

आह!

आह

समस्त सभ से नागराज
जंगलियों के लिए कहें बन गया —



चिल —

नागराज!
ओसाका जीवित
नहीं गया।

ओह!



नागराज कासी पर सवार
घाटी में प्रवेश कर गया —

तुम्हारा बलिदान
यह नहीं जायेगा
ओसाका!



थोडांगा की घाटी में पहुँचते ही रातों
तपक से चिल गया कासी —



ओह!
थोडांगा के पालतू
कुत्ते!

इनके
लिए खिली
फुकरा!

नागराज!
खतरा!

सारा सभ से नागराज
के मुँह से एक निकली धी
फुकार...



— जंगलियों में अगवध
सच गई।

इसी क्षण एक ऊपर गूँजा, और कासी
की कलना चिंता से चप्पा-चप्पा गूँज उठा..

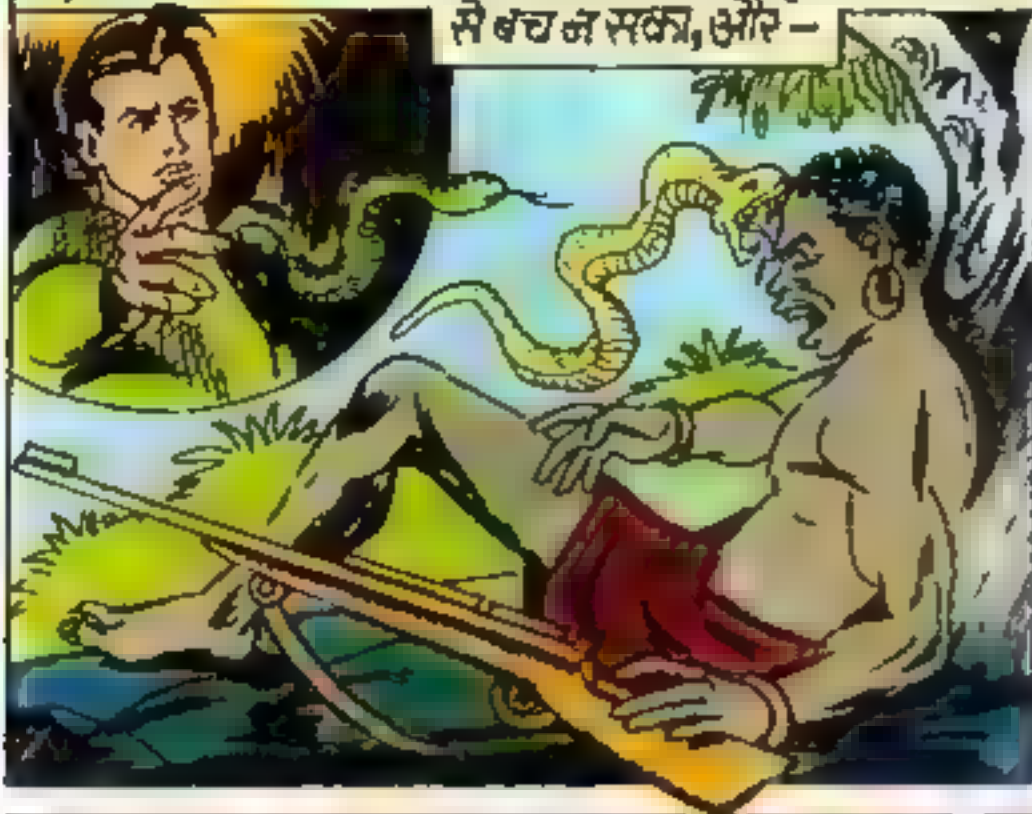


ध्याय

किंवा

कासी!

पेड़ के फलों में छिपा जंगली जागराज की विष बुझी निगाहों से बच न सका, और —



दर्द से चिंघाकता कात्मी नीचे बैठ गया —

नहीं कात्मी नहीं! कदम-कदम पर साथ दिया है तुने हमारा। मांजिर पर पहुंच कर साथ छोड़ रहा है तू!

उफ!



फिर एकामएक ही सुरंग उठा जागराज —

तेरी कस्म कात्मी! इस घाटी में अब एक भी घोड़ांगा का कुत्ता जीवित नहीं बचेगा!



आगे बढ़ते जंगलियों पर मौत बनकर टूट पड़ा जागराज —



छेनिराम ने गोली चर्च कर दी —



एक जंगली रंगीन बोंडों के पिंजरे तक जा पहुंचा, और —

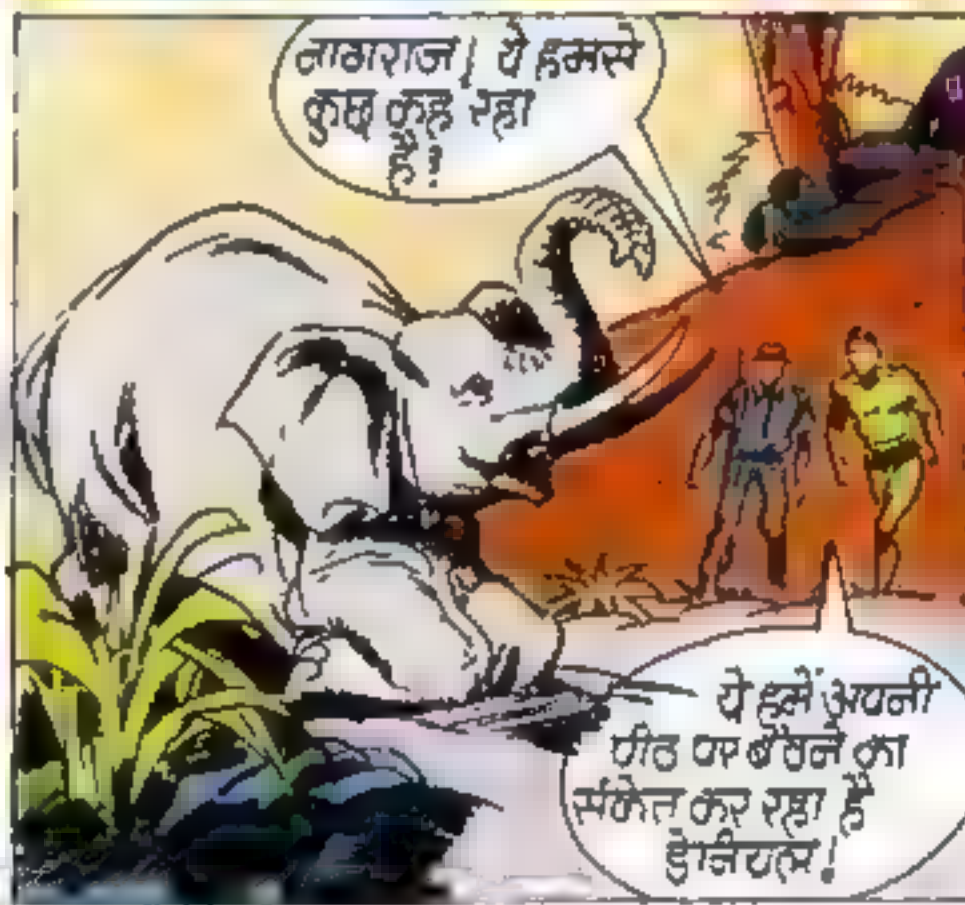
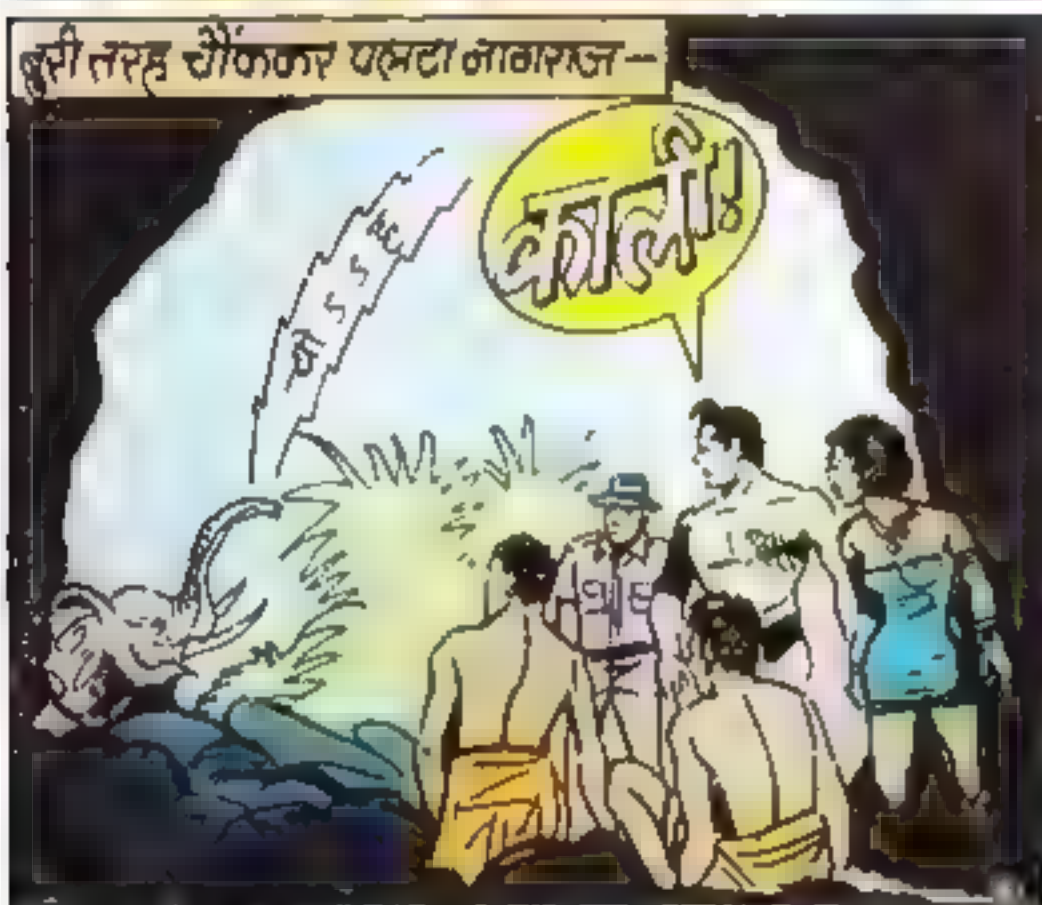


जाओ! कुचल डालो बुझनों को!

बोंडों के साथ भागने से मानो धरती पर मेघाल आ गया —



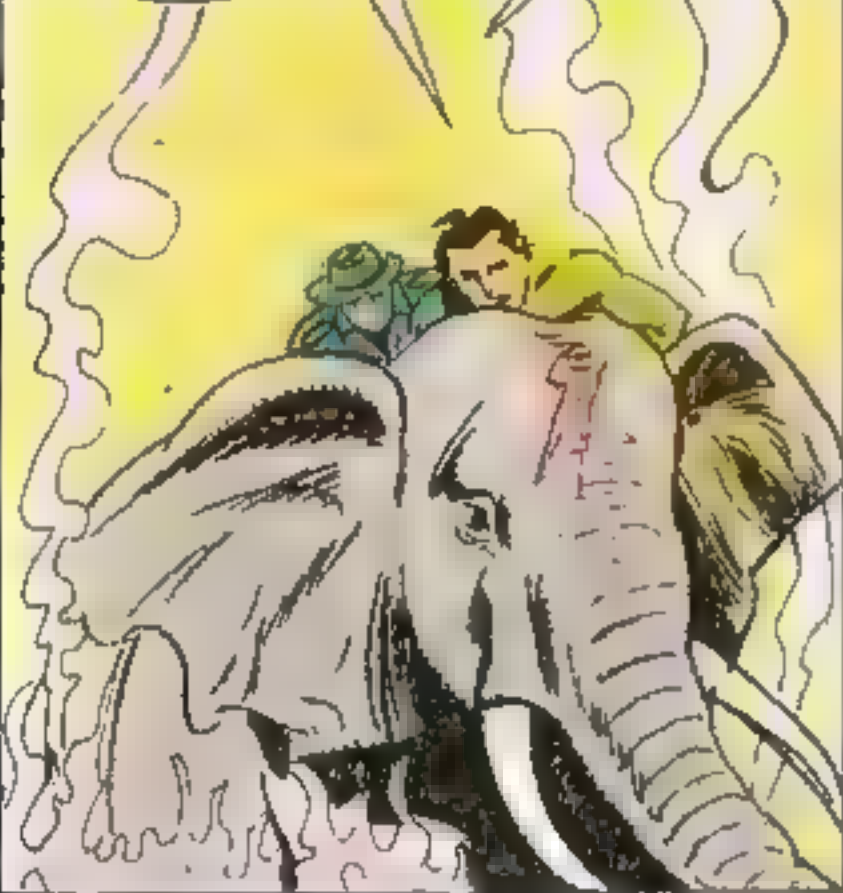




दोनों सांस रोके उसकी पीठ पर चिपके रहे -

कैसे-कैसे
सायाजात्र हैं अफ्रीका के
इन जंगलों में। धरती
ही उंगारा बनी
है।

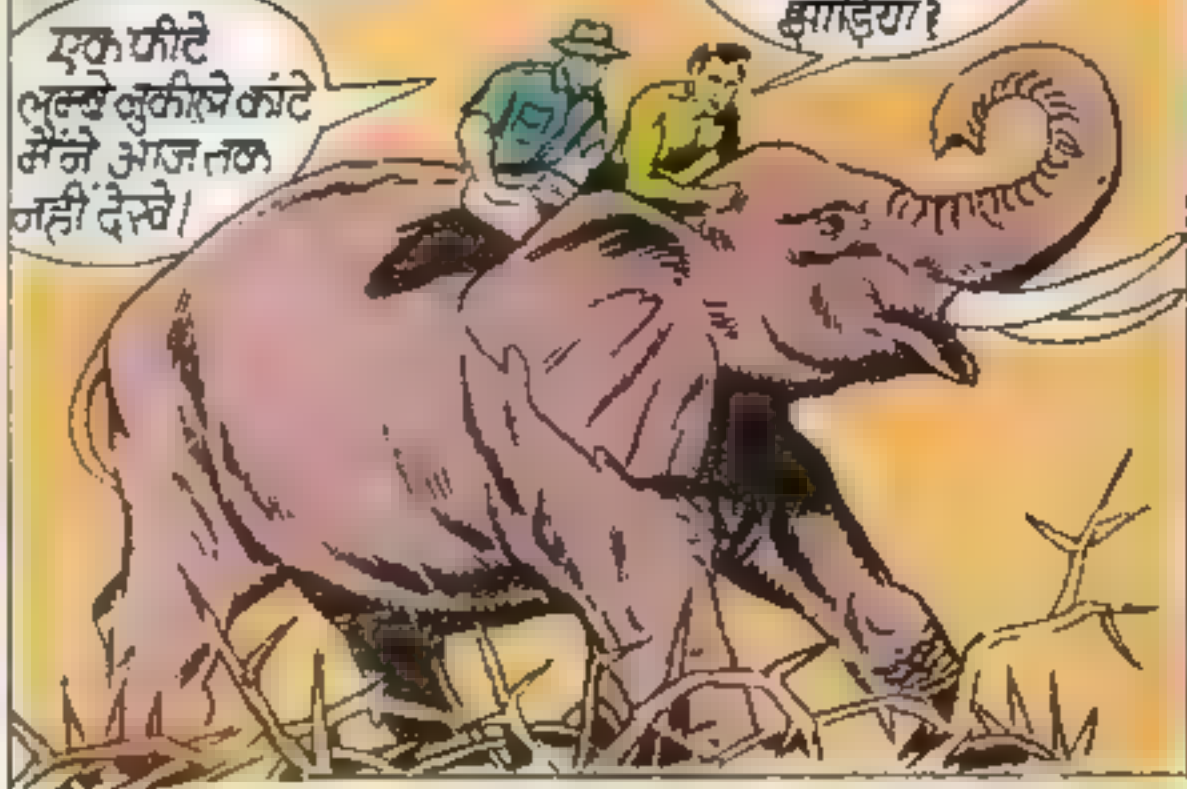
ठानी भी
कितनी है। उफ!
किंतु ये काली जा
कहां रहा है?



अंगारों की धरती से निकलकर काली पहुंच गया लुकीली, बिबेली,
कंटीली झाड़ियों में -

आदमकद कंटीली
झाड़ियां?

एक पीटे
लुकीली कंटीले
में तो आज तक
नहीं देखे।



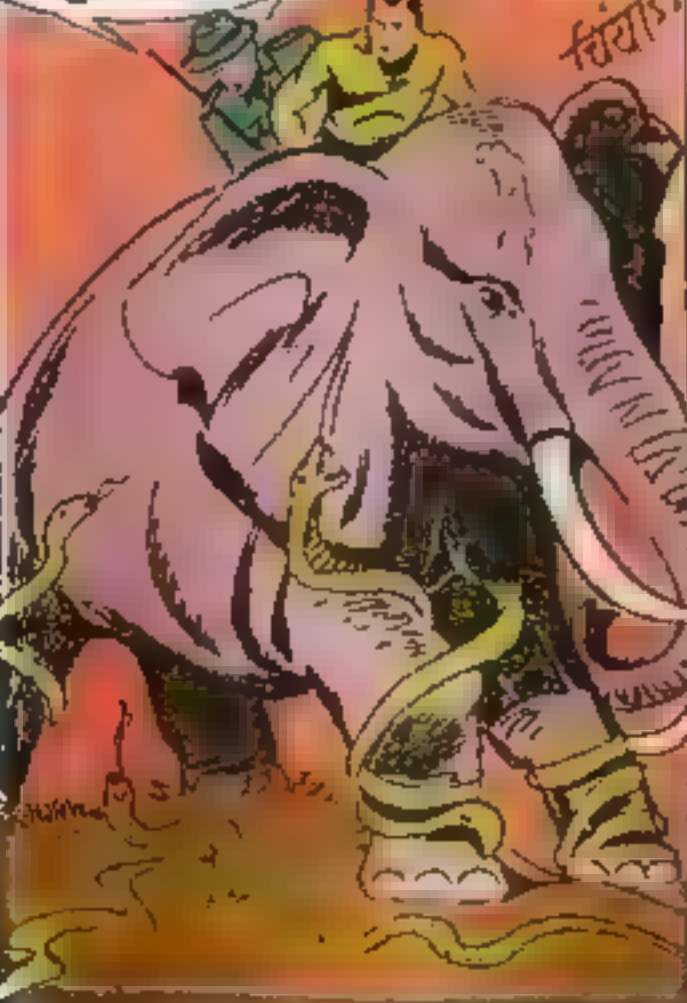
लुकीले जहरीले कंटीले काली की सतत सांस को भी चीरते चले गए -



काली के कंटीलों की छाटी से बाहर निकलते
ही दोनों की आंखें एक बार फिर आश्चर्य
से फैल गई -

उफ! नागराज!
काली के पांशों पर सांप
बिछुरिपटे हैं।

नहीं!



नागराज ने विच भरी फुंकार
केंकी -

इन जहरीले सांप -
बिछुरे आँकों की काली से अलग
करना होगा, अल्पा रो
अपर चढ़कर
डुबित की
डस लेगे।



और अब, काली बढ़ रहा था उस लुकीली चट्टान
की ओर -

आगे तो
कोई छाटी
नहीं रही है
नागराज!



लुकी तो
इसमें कोई रहस्य
नहीं रहा है। काली इस
प्रकार हलके खतरनाक
रास्तों से होकर...

कात्ती की मोट्टी लगी है। कहीं कात्ती... उफ... नहीं!

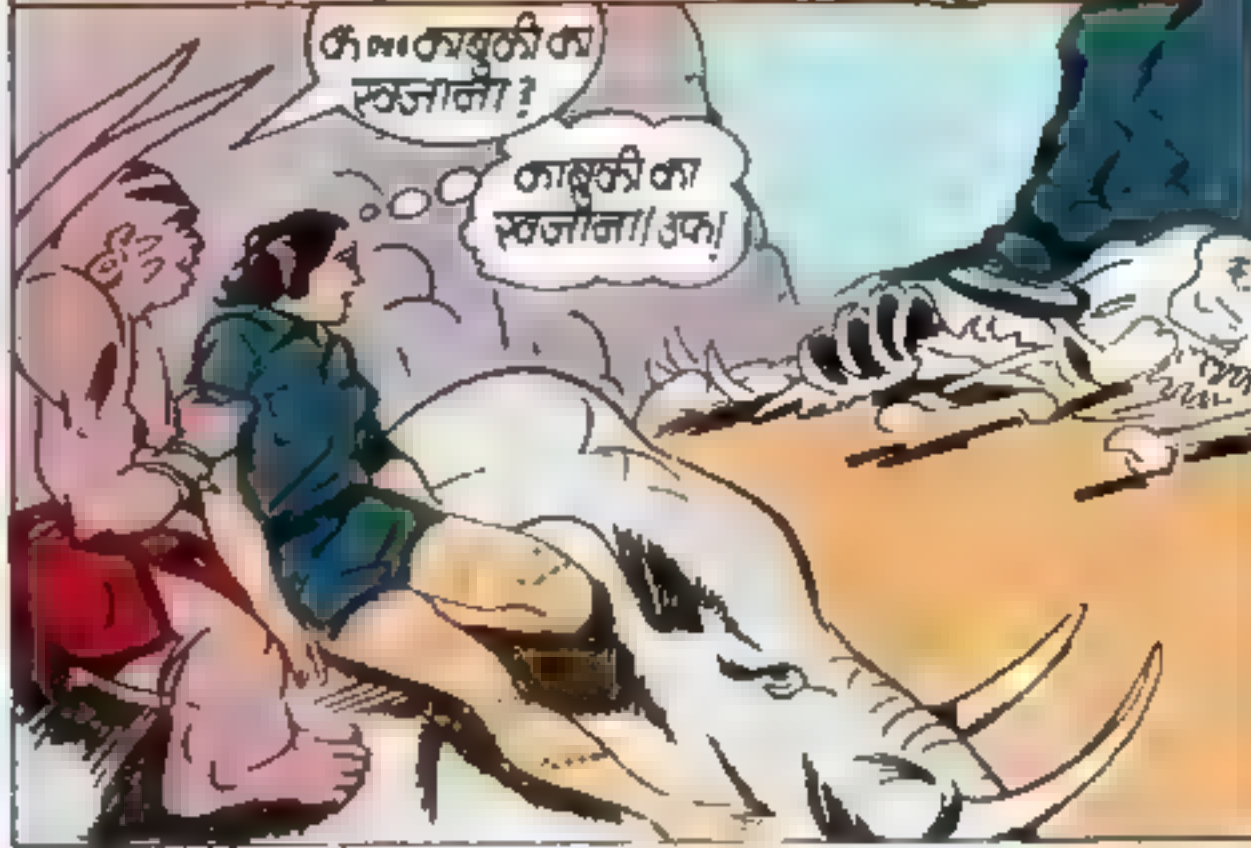


कुछ सोचते-सोचते जागराज के रींगटे खड़े हो गए—

उधर थोडांगा का काबुकी सब बाधाओं को पाकर जहां पहुंचकर रुका—

कौन काबुकी का खजाना?

काबुकी का खजाना! उफ!

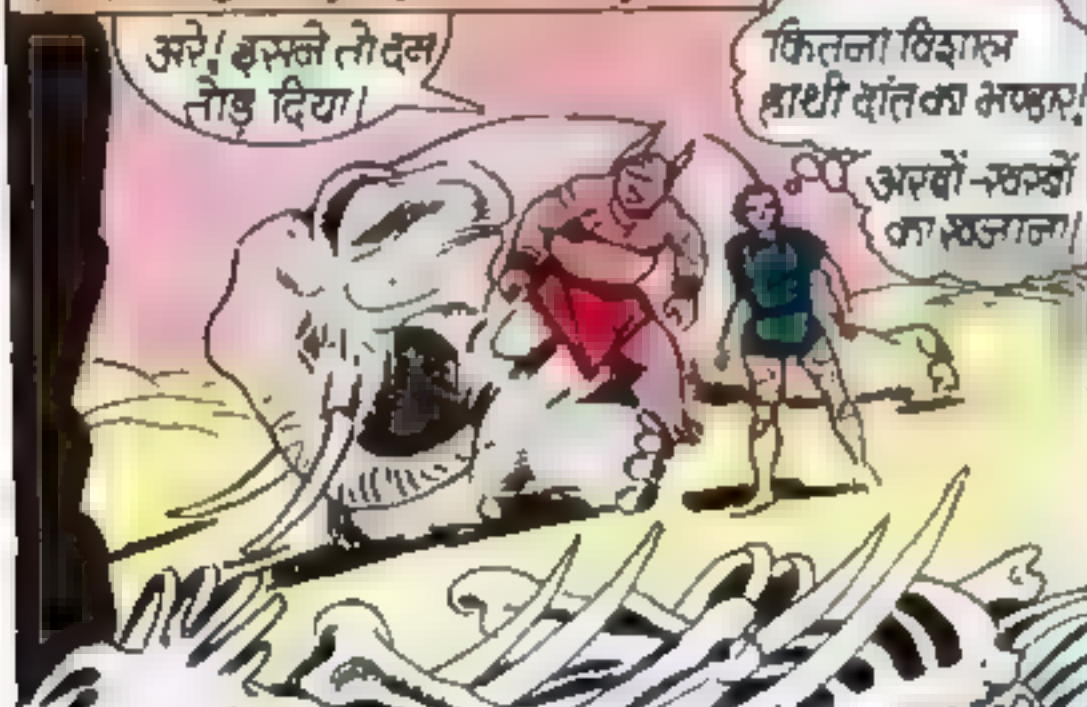


एकएक काबुकी लहखड़ाकर बैठ गया, और—

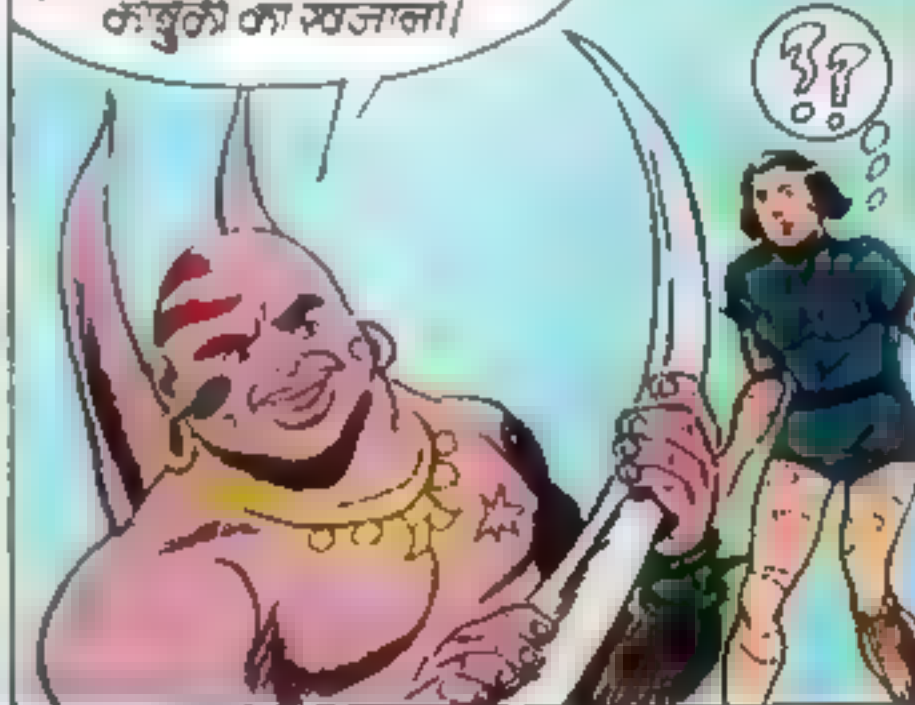
अरे! इसने तो दम तोड़ दिया।

कितना विशाल हाथी दांत का भण्डार!

अबों-सबों का खजाना!



हा हा हा! आखिर मैंने पा लिया काबुकी का खजाना!



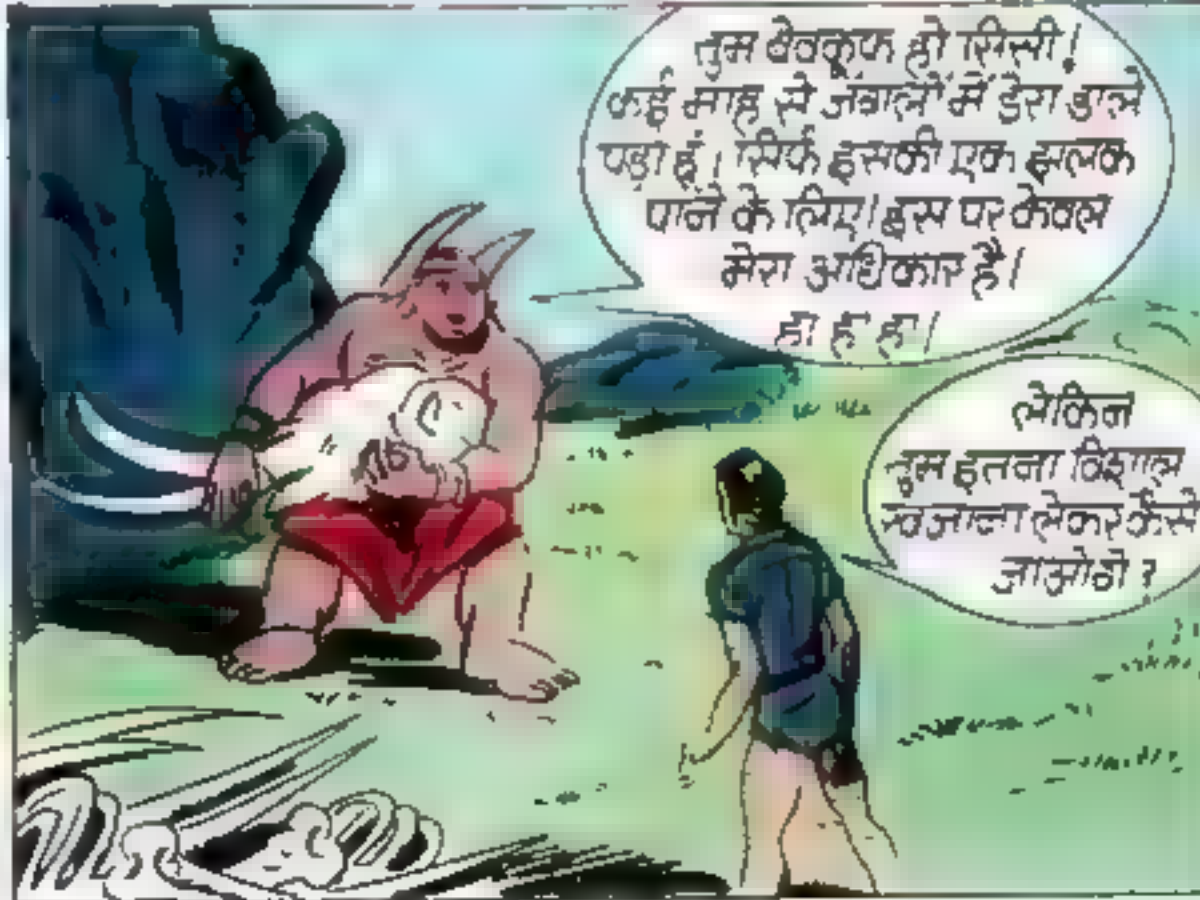
थोडांगा! ये खजाना सरकार की अमानत है।...

...देहा की उन्नति व सैलस वैन रिजर्व के जागवरो की सुरक्षा के लिये इसका उपयोग होगा।



तुम बेवकूफ हो गिरी! कई माह से जंगलों में डेरा डाले पड़ा हूं। सिर्फ इसकी एक हलक पाने के लिए। इस पर केवल मेरा अधिकार है। हा हा हा!

लेकिन तुम इतना विशाल खजाना लेकर कैसे जाओगे?





बैठक लड़की! थोडांगा
पहले ही बुद्धिमान करके चला
है। वह देखा।

ओह! यह
ने पूरी तैयारी के
साथ आया है।



हाथियों के निकट आते ही थोडांगा जंगली मैसों की तरह
उत्तरा —
यह सारा सजाला हाथियों
पर बादकर थोडांगा की
घाटी ले चलो।

क्या! मैं
नागराज की किसी तरह
यहां ला सकती।



काबुकी का बजाना!?

चारों तरफ बिखरा
पड़ा लाशों टुक हाथी
दांत!



दोनों नीचे झुक आये —

काली हमें काबुकी
के स्वजाने तक ले आया
नागराज!

तो मेरा हाक सही
लिकर आ। उफ काली! तुमने
दोस्ती का फर्ज अदा
कर दिया।



इसी क्षण काली लड़खड़ाकर लीर पड़ा —

काली! नहीं
काली!



दोनों के देखते-देखते काली ने प्राण
त्याग दिये —

उफ! डेनियल!

काली के मस्तक पर लगी गोली
इसे काबुकी के स्वजाने की ओर ले
आई। जहाँ अकर इसने अपने
प्राण त्याग दिये हैं।

लेकिन
मस्ते-मस्ते भी ये
एक नेक काम
कर गया।



तभी घाटी हाथियों की चिंगाहों से गूँज
उठी —

हाथियों की चिंगाहों की
आवाजें। नागराज, निकट
ही कहीं बहुत से हाथी
हैं।

लेकिन यहाँ
तो केवल वह
हाथी आते हैं जो
मरने वाले होते हैं।
कुछ गडबड़ लगती है
डेनियल, आओ
मेरे साथ।

कुछ और आगे बढ़ते ही—

जल्दी! जल्दी
करो!

थोड़ागा!
सिंसी!

ओह! तो ये
हमसे पहले ही यहां आ
पहुंचा है।

सभी हाथी
उस बल काबूकी
के पीछे-पीछे यहां
पहुंचे हैं। अच्छा था
यहां वह हाथी नहीं
पहुंच सकता,
जिसकी उम्र अभी
नवम्बी है।

थोड़ागा का काफिला लैगार
होगया। तभी—

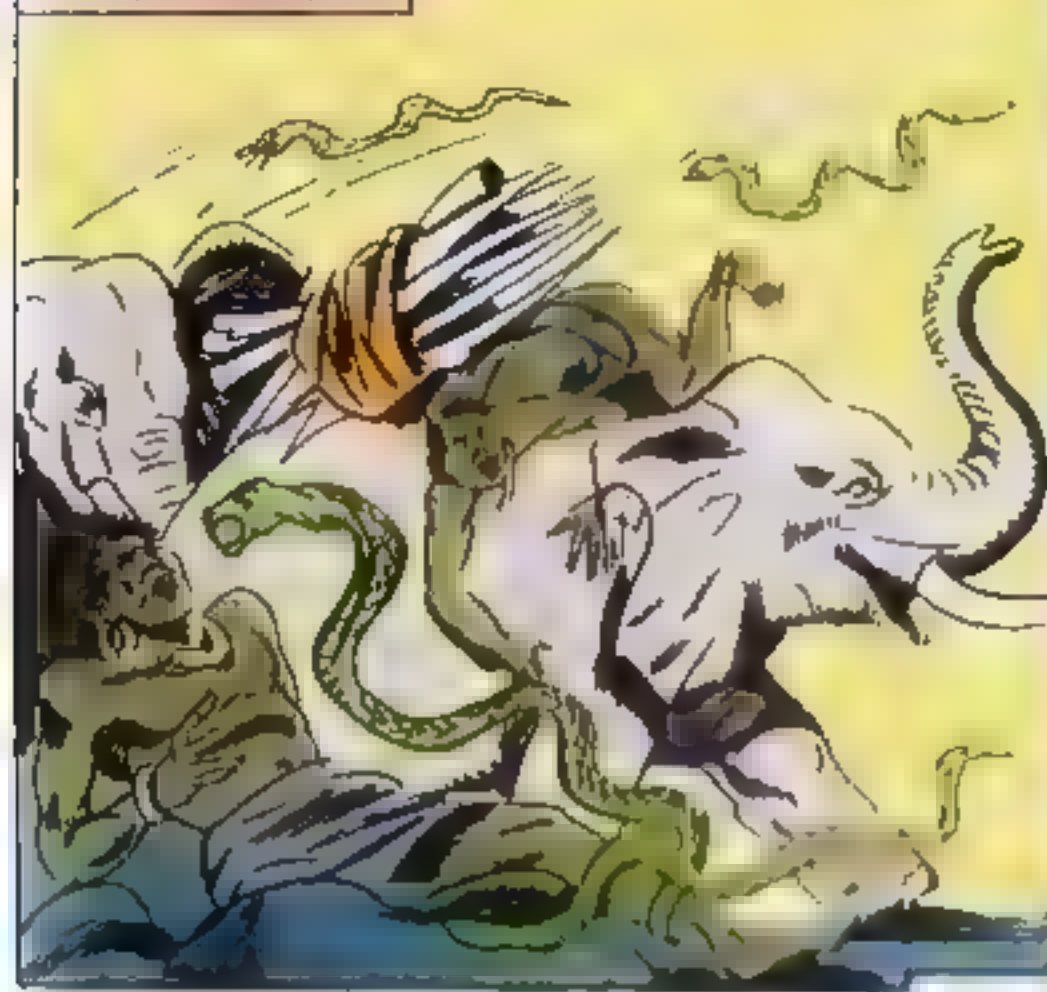
थोड़ागा! कमीले!
हत्यारे! मैं तुम्हें नहीं
छोड़ूंगा।

तो यह तुम्हारी हरकत है। मुझे
तुम्हारी यह हरकत भी पसन्द आई
सिंसी! क्योंकि अब तुम्हें कहीं
दांतों व हाडिडियों के बीच रहना
है। मैं तुम्हें यहीं छोड़कर
जा रहा हूँ सिंसी!

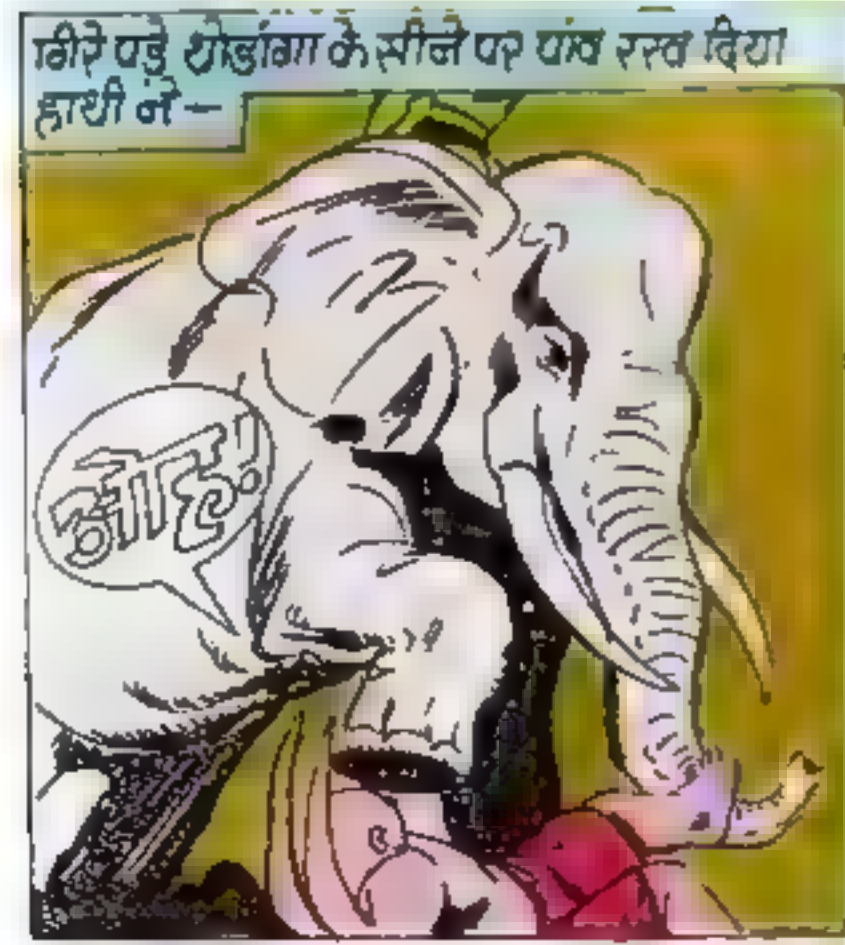
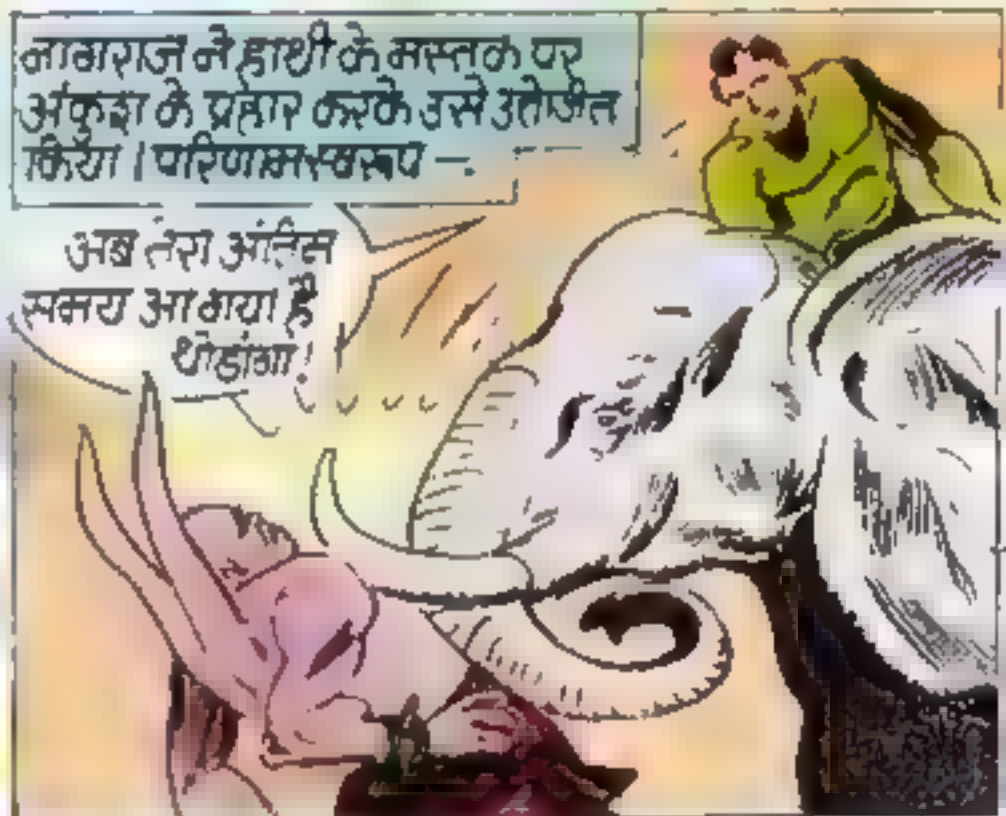
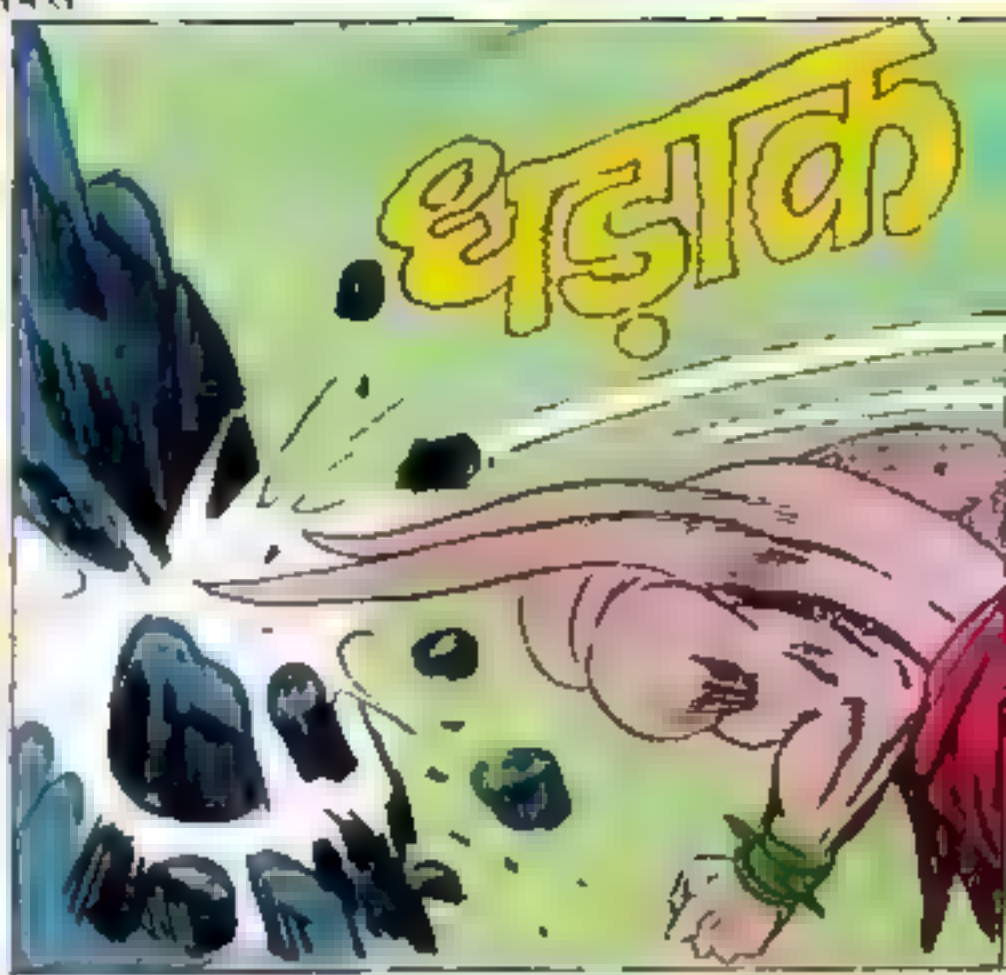
ओह!
यह क्या?

आह!

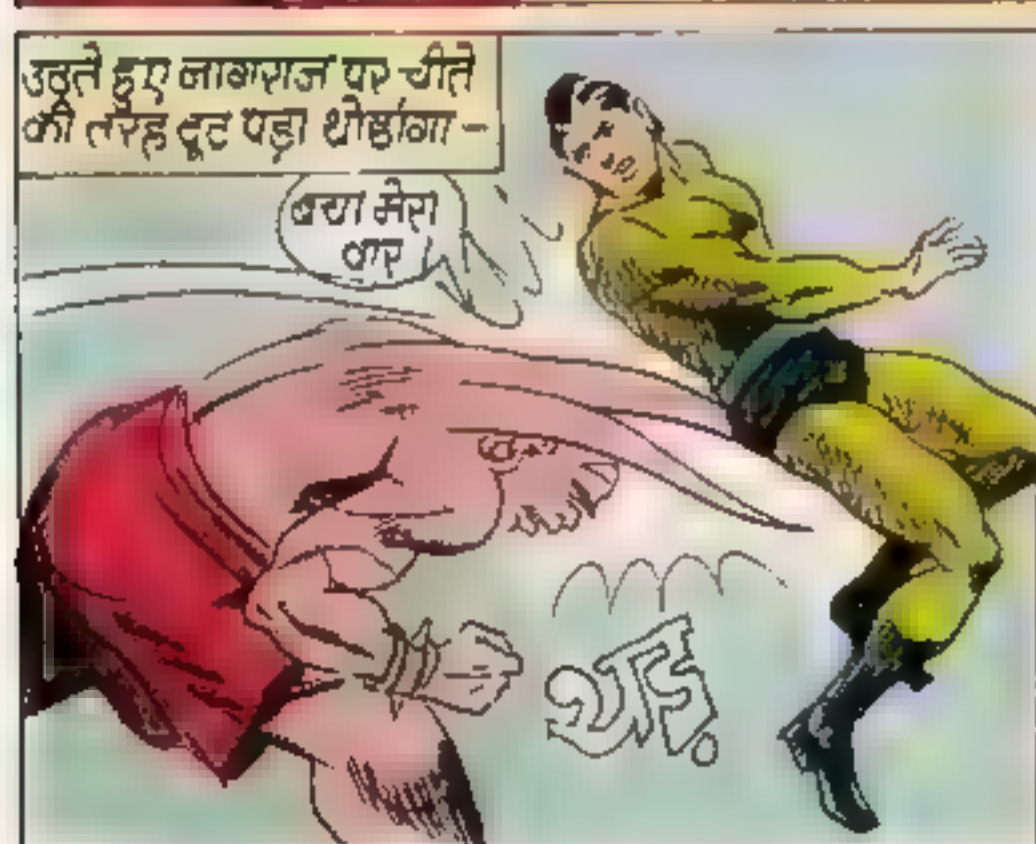
ठीक इसी पल अपने-अपने हाथी पर चढ़ते जंगलियों में भवादह मच गई—



लेकिन इस पल में ही थोड़ागा की टक्कर सिंसी के परसवों उड़ा देती—

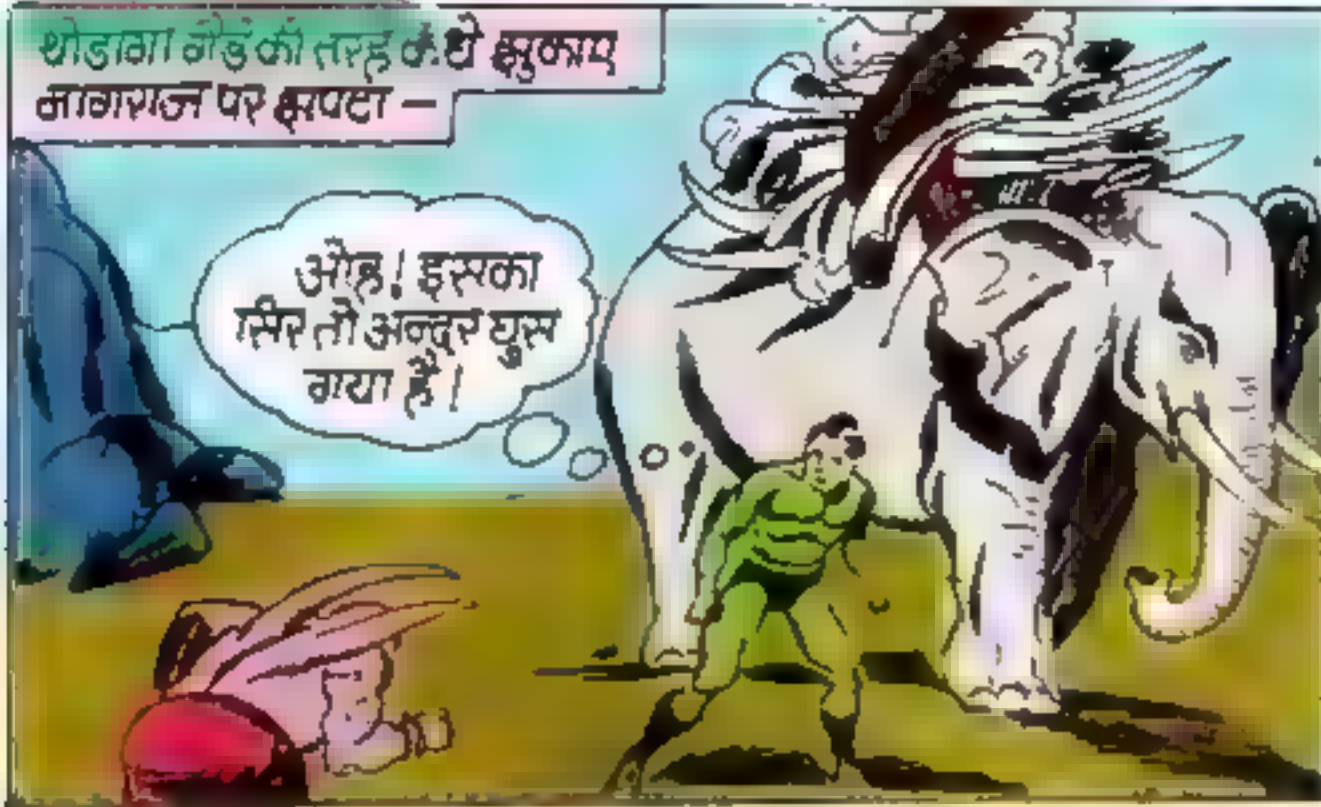


थोडांगा ने पाख उमरकर हाथी को उठा लिया—

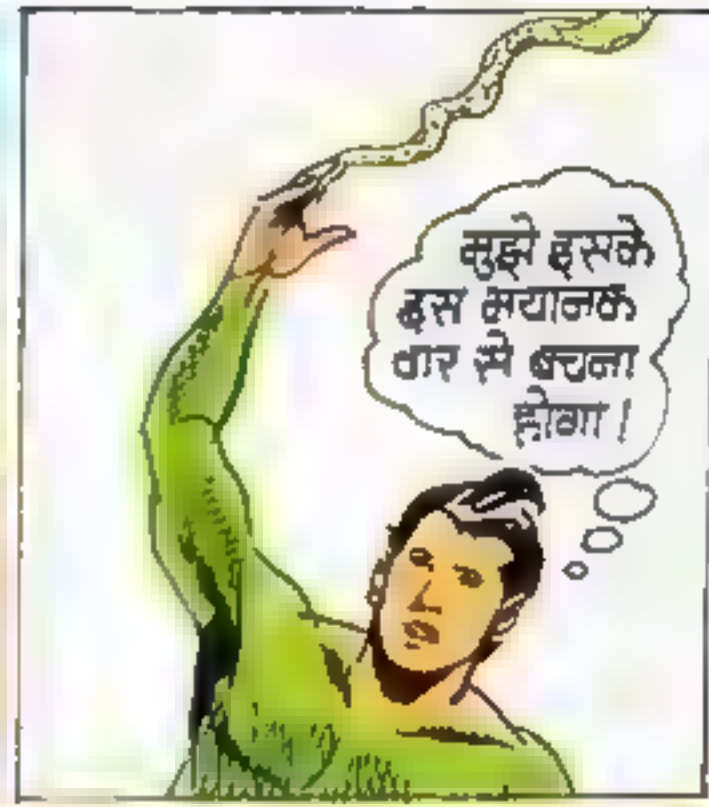


थोडागा गेंडे की तरह कंधे झुकाए
जागराज पर झपटा -

ओह! इसका
सिर तो अन्दर घुस
गया है!

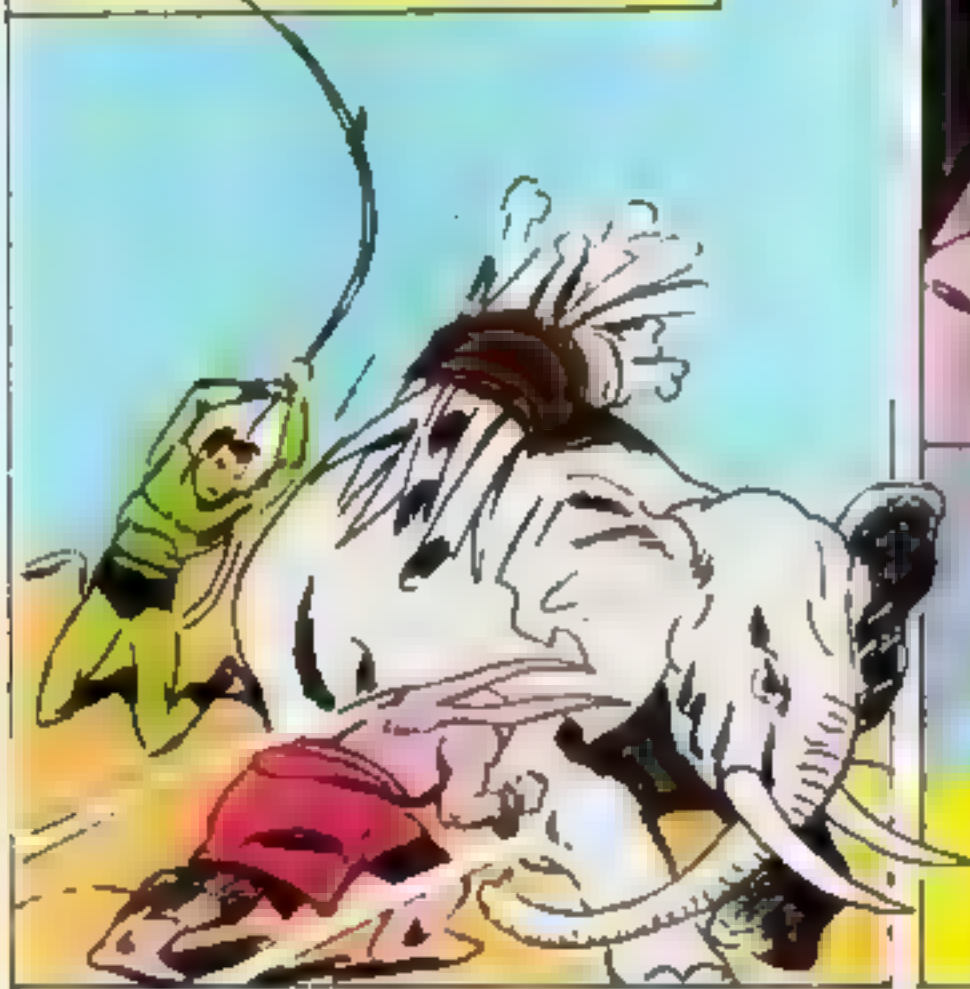


मुझे इसके
हस मराने के
चार से बचना
होगा!



ऐन समय पर जागराज जागरासी पर झूट गया,
और थोडागा जा टकराया हाथी से -

हाथी पर लगे हाथी दांत के खजाने का डेर थोडागा पर आ गिरा -



हथार डेनिरा बचे-सुचे जंगलियों को अपनी बंदूक का निशाना बना
रहा था -

तुम सबकी कड़ा
यहीं बनेगी!

आ 555
ह 55

धौर धौर



सिंसी भी बुझनों पर दूट
पड़ी थी -

आओ! आओ
कुत्तो!



उधर नागराज व थोडांगा आमने-सामने थे—

नागराज! आज तुम्हें
मारकर मैं विश्व के सभी महान
अपराधियों को तुम्हारे आत्मक
से मुक्त कर दूंगा।

बेटे थोडांगा! मैं
तुम्हें स्वतंत्र करने
आफ्रीका के जंगलों की
खाक छानता हुआ
यहां आया हूँ।



दोनों बीतान आपस में बिड़ गए —

आज
तुम्हें कोई शक्ति
नागराज के हाथों
मरने से नहीं
बचा सकती।



नागराज की थोडांगा की कलाई को नागराज की कलाई से
बांधती चली गई। इसी पल थोडांगा ने नागराज को
उछाल दिया—



पर चूंकि दोनों की कलाईयां आपस में बंधी थी, अतः
थोडांगा भी पीछे गिरने पर विवश हो गया—



नागराज पुनः उछला, और—



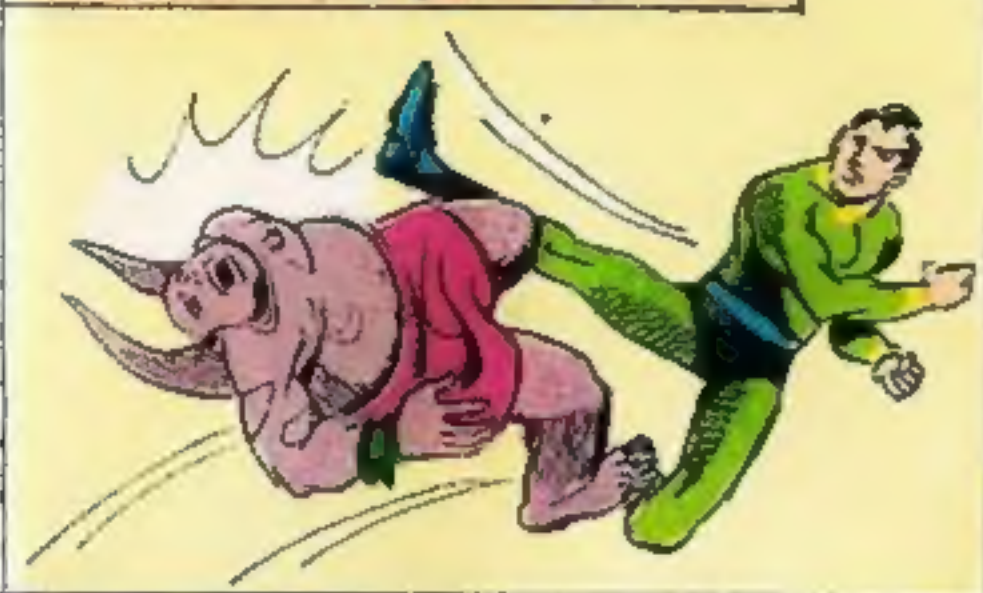
थोडांगा भी उछलकर खड़ा हो गया। तभी—

धड़ाक
हा हा हा



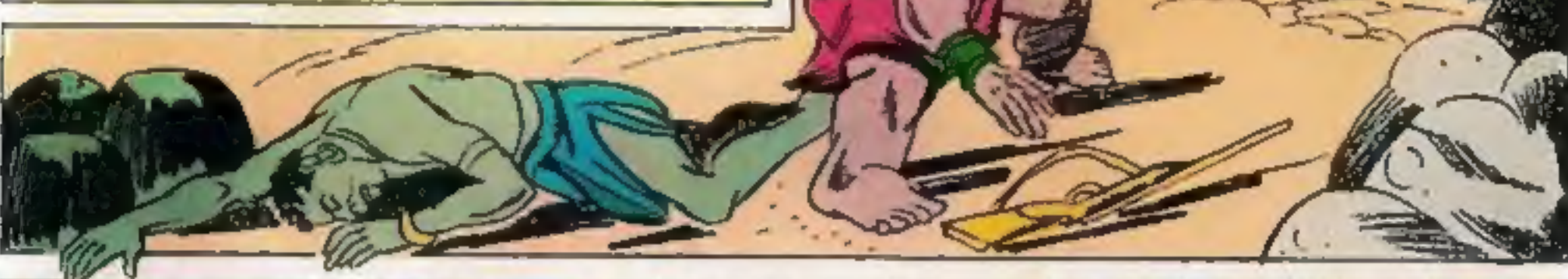


अगले ही पल नागराज हवा में उछला और—



फिर—

उफ! मेरा रक्षा कवच
टूटकर बिखर गया है। मैं इस
घाटी को लबाह कर दूंगा।
कोई नहीं बचेगा।



इन हारीयों के रैलों में गोलाबारूद
भरा है, अगर मैं इस सारे गोला-
बारूद को उड़ा दूँ तो घाटी में
तबाही आ जायेगी।
हा हा हा।



हा हा हा



बड़ाफ
बड़ाफ
बड़ाफ



थोडांगा! रुक जा हत्यारे!
मत्त मार इन निरीह
प्राणीयों को।

